ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे **निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून**

वर्षः 26	अंकः 23	बुलेटिन अवधिः 22–26 मार्च 2017	दिनः मंगलवार	दिनाँकः 21 मार्च, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	22–03–2017	23–03–2017	24–03–2017	25–03–2017	26–03–2017
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	29	30	30	31	31
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	11	12	12	13	14
बादल आच्छादन	साफ	बादल	साफ	आंशिक बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	85	85	85	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	40	40	40	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	008	006	006	006	008
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (14 से 20 मार्च 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान में बादल छाये रहे तथा वर्षा नहीं हुई, अधिकतम तापमान 24.9 से 28.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 5.9 से 10.9 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 83 से 91 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 31 से 37 प्रतिशत एवं हवा 3.8 से 6.6 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम–उत्तर–पश्चिम व पश्चिम–दक्षिण–पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- मार्च–अप्रैल में मेंथा की खेती रोपाई विधि से करें इसके लिए मेंथा की 40–45 दिन की पौध की रोपाई 40 से0मी0 की दूरी पर बने लाईनों में 15–20 से0मी0 की दूरी पर करें।
- मेंथा की खड़ी फसल में पहली कटाई के 10–15 दिन बाद अगर खरपतवार दिखें तो एक बार निराई गुड़ाई करें।
- मटर की जब 90 प्रतिशत फलियाँ पक्कर भूरे रंग की हो जाये तब कटाई करें। फसल को सुखाकर ओसाई करें। बीज को सुखाकर भण्डारित करें।
- चारे वाली फसलों –चरी, मक्का, बाजरा, मकचरी, लोबिया और ज्वार आदि की बुवाई मार्च माह में कर सकते है। इनकी बुवाई पूरे मार्च माह तक करें।
- मूंग की बुवाई मार्च के दूसरे पखवाड़े से 10 अप्रैल तक कर सकते हैं।
- चना एवं मसूर की पत्तियाँ पीली पड़ कर झड़ने लगें, उस समय कटाई करें। कटाई सुबह के समय हसिया से करें तथा 6–7 दिन धूप में सुखा कर गहाई एवं ओसाई करें। दानों को अच्छी तरह सुखा भण्डारित करें।
- चना व मसूर में झुलसा रोग के लिए मैनकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 का 2.5 ग्राम प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- गेहूँ की फसल मे चूर्णिलासिता का प्रकोप दिखाई पड़ने पर प्रोपीकोनाजोल 25 ई0 सी0 का 1 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- चना में फलीबेधक के नियंत्रण के लिए क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 125 मि0ली0/है0 या इमामेक्टीन बेन्जोएट 5 एस0जी0, 220ग्राम/है0 या नोवाल्यूरान 10 ई0सी0, 750 मि0ली0/है0 या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5 ई0सी0, 500मि0ली0/है0 500लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- गेहूँ में यदि माहू का प्रकोप हो तो थायोमेथाक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0 50ग्राम/है0 या क्यूनॉलफास 25 ई0सी0 एक लीटर/है0 की दर से छिड़काव करें।
- सरसों में माहु का प्रकोप होने पर थियामेथोक्जाम 25 डब्लूएसजी 50–100 ग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे। इसकी प्रतीक्षा अवधि 21 दिन है।

उद्यान प्रबन्धः

- पुष्पन के समय बगीचो की जुताई से भी बचें, आवश्यकतानुसार बागो की सिंचाई करे।
- पुष्पन के समय कोई भी कीटनाशी दवा का प्रयोग ना करे। क्योंकि इससे परागण में भाग लेने वाली मक्खियो के मरने का खतरा होता हैं।
- खर्रा रोग का अधिक प्रकोप होने पर वैज्ञानिको की सलाह लेते हुए घुलनशील गन्धक 2 ग्राम/ली0 अथवा कैराथिन 6 मिली0/10 ली0 की दर से छिड़काव करे।
- प्याज व लहसुन में यदि ऊपर से पत्तियाँ पीली पड़ रही हो तो नियंत्रण हेतु डिफीनोकोनाजोल का 1 मि0ली0/लीटर + फिप्रोनिल 5 प्रतिशत एस सी 1 लीटर प्रति हैक्टेयर एवं स्टीकर 0.5 मिली0 प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150मि0ली0/है0 के छिड़काव के तीन दिन बाद या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस0सी0, 500मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल का उपयोग करें।
- टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्ट्रानिलीप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0/है0 या थियामेथोक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0, 200 ग्राम/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल को खाने हेतु प्रयोग करें।
- बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस0जी0 200ग्रा0/है0, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि0ली0/है0, लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 सी0एस0 300मि0ली0/है0 की दर से अन्तिम छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का उपयोग करे।
- मिर्च में थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि0ली0/है0 या फिप्रोनिल 5 एस0सी0 1लीटर/है0 की दर से छिड़काव के सात दिन बाद ही मिर्च का प्रयोग करें।
- मिर्च में माइट के नियंत्रण के लिए डाईफेन्थयुरान 50डब्लू0पी0 600ग्रा0/है0या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का प्रयोग करें।

- प्याज में थ्रिप्स के नियंत्रण के लिए लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद तथा पर्पिल ब्लॉच के नियंत्रण हेतु डिफेनोकोनाजोल 25इसी 0.1प्रतिशत या कीटाजीन 48 इसी 0.2 प्रतिशत का छिड़काव के 20 दिन बाद फल का उपयोग करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- मुर्गियों के अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए उनके आवास के तापमान का विशेष ध्यान रखें, उन्हें खाने के लिए सन्तुलित आहार दें तथा साफ–सुथरा एवं ताजा जल उपलब्ध करायें।
- पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए ताकि उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें। बैठने का स्थान समतल ना होने पर पशु खड़ा रहेगा जिससे वह तनाव में आ सकता है और उत्पादन क्षमता प्रभावित होगी।
- जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के बैठने के स्थान पर सूखा चारा अथवा सूखी घास बिछा दें। प्रसव के उपरांत पशु पालक स्वच्छता की ओर विशेष ध्यान दें।
- भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होना, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरो का गोबर के साथ आना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान की जा सकती है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं तथा निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार तत्काल उपचार करायें।
- पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15 सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिलाना लाभकारी होता है। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर